

भारत के लिये एक जलवायु भेद्यता सूचकांक

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (Department of Science and Technology-DST) ने देश के विभिन्न राज्यों के सामने आने वाले जलवायु जोखिमों का आकलन करने के लिये एक अध्ययन शुरू करने का नरिणय लया है ।

प्रमुख बदि

- वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के आगामी अध्ययन से जलिवार आँकड़ों के साथ पोर्टल तैयार कया जाएगा । इसके अंतर्गत 12 हमिलयी राज्यों द्वारा सामना कये जा रहे ग्लोबल वारमिंग जोखिमों का मूलयांकन कया जाएगा ।
- इसके तहत असम, अरुणाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे राज्य जलवायु परिवर्तन के प्रता संवेदनशील राज्यों को विशेष रूप से संदर्भति कया जाएगा जो पछिले साल यू.एन. जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में चर्चा में आए थे ।
- इस पोर्टल के अंतर्गत देश के कसिी भी राज्य के पर्यावरणीय, सामाजकि, आर्थकि या अन्य कसिी भी तरह के जोखमि को देखा जा सकेगा ।

सामान्य कार्यप्रणाली

- पछिले साल मंडी और गुवाहाटी के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), और बंगलुरु के भारतीय वजिज्ञान संस्थान ने असम, मणपुर, मेघालय, मजोरम, नगालैंड, त्रपुरा, अरुणाचल प्रदेश, सकिमि, पश्चमि बंगाल, हमिाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी जलों के राज्य प्राधिकारयिों के साथ समनयव कर जलवायु परिवर्तन की जटलिताओं से नपिटने के लिये सामान्य कार्यप्रणाली वकिसति करने का प्रयास कया ।
- इसके अंतर्गत शोधकर्त्ताओं ने ज़िला स्तर के आँकड़ों के आधार पर इनमें से प्रत्येक राज्य का 'भेद्यता सूचकांक' तैयार कया । जसिमें भेद्यता (Vulnerability) को मुख्य रूप से भौगोलकि और सामाजकि-आर्थकि स्थति के आधार पर नहिति जोखमिों के रूप में संदर्भति कया गया ।
- वैज्ञानिकिों ने राज्यों के साथ कार्यशालाएँ आयोजति कर आठ प्रमुख मापदंडों को अपनाया, जसिके आधार पर भेद्यता स्कोर बनाया जा सकता है ।
- पैमाने पर 0-1 अंक तक अधसूचति कया गया है जसिमें 1 भेद्यता के उच्चतम संभावति स्तर को दर्शाता है, असम को 0.72 के स्कोर के साथ शीर्ष पर एवं 0.71 अंक के साथ मजोरम दूसरे स्थान पर है । सकिमि, 0.42 के सूचकांक स्कोर के साथ अपेक्षाकृत कम असुरकषति है ।
- विभिन्न कारकों ने राज्य के भेद्यता सूचकांक में योगदान दया । जैसे कि अरुणाचल प्रदेश में प्रमुख कारक नमिन महिला साकषरता और बीपीएल से ऊपर की आबादी का उच्च प्रतशित है, जबकि नगालैंड में प्रमुख मुद्दे हैं वन कवर, खड़ी ढलान और उच्च उपज परिवर्तनशीलता का नुकसान ।

